Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

शीलांमाऊ का जमर : सत्य और स्वाभिमान की अमर गाथा

अशोक दान*

* शोधार्थी (इतिहास) ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – चारण परंपरा में सत्य और स्वमान (स्वाभिमान) की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने का इतिहास बहुत पुराना रहा है। जब जब धर्म और सत्य पर संकट आया, इस समाज ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। ऐसी ही एक ओजस्वी गाथा जैसलमेर रियासत के झणकली गाँव की है, जहाँ शीलांमाऊ ने अपनी जागीर और स्वाभिमान के लिए जमर (अग्नि स्नान) किया।

विवाद की जड:ढाकणिया की जमीन – झणकली (जैसलमेर) के भादावतचारणों को ढाकणिया गाँव में एक 'खड़ीन' (खेती योग्य भूमि) जागीर में मिली हुई थी। लेकिन जैसलमेर के तत्कालीन हाकम (प्रशासक) और मेहता दीवान की कुदृष्टि उस जमीन पर थी। उन्होंने उस जमीन का पट्टा 'खोखर' मुसलमानों के नाम कर दिया। यह खबर जब झणकली पहुंची तो चारणों के स्वाभिमान को ठेस लगी। उन्होंने साफ कहा, 'ढाकणिया में जैसलमेर की एक इंच भी जमीन नहीं है'। पर 'गुणचोर' (एहसान फरामोश) खोखर अपनी हठ पर अड़े रहे। उन्होंने कहा कि हम वर्षों से यह खड़ीन खड़ रहे हैं, यह हमारा है। चारणों ने समझाया कि हमने तुम्हें पेट भरने को जमीन दी और तुम मालिक बन कर बैठ गए? लेकिन सत्ता के नशे में चूर हाकम और लालची खोखर नहीं माने।

जमर का निर्णय और शीला माऊ का रौद्र रूप – अन्याय को सिर पर खड़ा देख झनकली के चारणों ने तय किया कि अब 'जमर' या 'तेलिया' (आत्मदाह/त्रागा) के अलावा कोई चारा नहीं है। पर सवाल था कि जमर करेगा कौन? अंत में निर्णय हुआ कि भाडली में बैठीं जोगराज जी की विधवा शीलांमाऊ से सलाह ली जाए। उनके पुत्र सारंगधर जी को भाडली भेजा गया। बेटे ने जाकर माँ को पूरी व्यथा सुनाई कि कैसे खोखर जमीन दबा रहे हैं और समाज संकट में है। यह सुनते ही शीलांमाऊ का रूप बदल गया। वे तमतमा उठीं और बोलीं–'दीकरा ! तेरे पिता का स्वर्गवास हुआ है मैं तो अभी जिंदा हूँ ना जमीन के लिए जमर मैं करूंगी'। उनकी आंखों में अंगारे देख भाटी महिलाओं ने रोकना चाहा, पर शीलां ने कहा, 'मुझे अब किसी के साथ की जरूरत नहीं, मुझे तो नौ–लाख (शक्तियों) का बुलावा आ गया है'।

ढाकणिया में अग्नि परीक्षा – शीलांमाऊ सीधे ढाकणिया पहुंचीं और ललकारा 'अरे खोखरों ! खज (हक का) खाने से पेट भरता है, अखज (हराम) का खाने से नहीं'। खोखरों ने उपहास उड़ाते हुए कहा कि हम गीदड़ भभकियों से नहीं डरते। यह सुनते ही माऊ ने जमर की तैयारी का आदेश दिया। गोमजी नामक एक व्यक्ति ने शंका जताई कि 'जीते जी जलना आसान नहीं है माऊ'। इस पर शीलांमाऊ ने अपनी सत्यता का प्रमाण (परचा) दिया। उन्होंने खौलते हुए घी की कड़ाही में नंगे हाथ डालकर 'सीरा' (हलवा) बनाया और सबको जिमाया। उनकी हथेली ऐसे चल रही थी मानो ठंडे पानी में हो। फिर भी जब गोमजी ने संदेह किया, तो माऊ ने कटार निकाली और अपने दोनों स्तन काटकर अग्नि को समर्पित कर दिए

दोहा:

थण काट होमिया अगन, आपरा निज हथाळ। भरैथाळ में, देख
अनोपदानजीबीठू ।।

भावार्थ: उन्होंने अपने हाथों से अपने शरीर के अंग काटकर अग्नि देव को भोग लगा दिया, यह दृश्य देख सबकी रूह कांप गई। गोमजी चरणों में गिरकर माफी मांगने लगा।

देव योग और हाकम का विनाश– चिता सजाई गई। हाकम ने अपने सिपाहियों को चिता बिखेरने का आदेश दिया, लेकिन चिता के पास जाते ही सिपाही माऊ के तेज से मूर्छित होकर गिर पड़े। फिर हाकम ने मेहर मुसलमानों को हुक्म दिया लेकिन उन्होंने साफ मना कर दिया कि 'हम जतियों सतियों के तेज से लड़ नहीं सकते, हम यह नीच कर्म नहीं करेंगे'। जैसे ही शीलांमाऊ चिता पर बैठीं, बिना माचिस के ही अग्नि स्वत: प्रज्वलित हो गई। यह सत्य का चमत्कार था। तिथि: विक्रम संवत 1920, कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी।

श्राप और परिणाम– माऊ तो ज्योति में विलीन हो गई, लेकिन उनके कोप की आग ने जैसलमेर को जला दिया। जो 'लाय' (आग) लगी, उसने हाकम, मेहता और खोखरों के वंश को नहीं छोड़ा। हाकम का बेटा उसी दिन कुएं में गिरकर मरा, और मेहता भी नहीं बचा। सबसे बड़ा वज्रपात जैसलमेर राजघराने पर हुआ। महारावलरणजीत सिंह का इकलौता बेटा लालसिंह उसी रात पलंग से गिरकर मर गया और राजा रणजीत सिंह निर्वंश ही सिधार गए।

छंद:

शीलां सुख करणी आयांसरणी, दे धन धरणी दुख हरणी।
खोखर सब खाया दुष्ट दबाया, गांमझिणकलीजस गाया।।
भावार्थ:शीलांमाऊ शरण में आए लोगों का दुख हरने वाली देवी बनीं।
दुष्ट खोखरों का नाश हुआ और झणकली गांव का यश अमर हो गया।

आज भी शीलांमाऊ देवी रूप में पूजी जाती हैं और उस दिन चारणों ने वह 600 बीघा जमीन गायों के लिए 'गोचर' (पुण्यार्थ) छोड़ दी, जहां आज भी गाएं चरती हैं। यह घटना सिखाती है कि 'प्राणादपिप्रत्ययोरक्षितव्य' प्राण देकर भी विश्वास और सत्य की रक्षा करनी चाहिए।

श्री सीलां माँ रो छंद

रचना,कविराजस्व श्री भंवरदान जी विठू (मधुकर)झणकली

साल अठ दस सत अठसमे मास घटा प्रिय मात।
दनुज गुरु दीप्त चहुदसउदेभयाअखियात। 1
पात हंस पी धर भूत पत गढ़ सरवर सुत गाम।
शुभ मुहूर्त सज द्विज सुत निरख्योसीलां नाम। 2
धन रतनु धन माड़ धर धन धन कोड़ा धाम।
धन शंकर तुझ धीवड़ीनवखण्डराखण नाम ।।3
विठू घर तोरण वांदयो मात वधारण मान।
जगत सुचावोझणकलीसांसणगामसुथान । 4
(छंद त्रिभंगी 18जोड़14तीन वृत्यनुप्रास)
शंकर घर स्याणी कन्या कहाणी वेद वखाणीब्रह्माणी
विमल सुरवाणी व्योम वचाणीउमा निज धर उतराणी।
इल पर आखाणी जगत सुजाणी घर जोगराजतणी धरणी।
सीलां सुख करणी आयांशरणी दे धन धरणी दु:ख हरणी माँ दे धन धरणी दु:ख हरणी। 1
धोखो नृप धारे बुरी विचारे लश्कर सारे ललकारे।
मोहता मणकारे तुरंग तैयारे हे संग खोखरहथियारे।
पूगाइणपारेसीम सहारे ध्वंश करण सांसण धरणी।
सीलां सुख करणी...2
चारण चळचळीयासामसुजळीयाकाळावासंगकळकलियां।
डगमगडोकरिया कसे कटरियाढिबढाकणियेआढलिया।
वेरीदळअळीयासामांवलियाउमेद गलिया अणिअरणी।
सीलां सुख करणी...3
साहलांसुण सारंग पड़ी पुकारंगजमरधारंगजणवारंग।
सीलां सत सारंग चिता प्रसारँग वचन उचारंग वृत्त धारंग।
मेटा अरि मारंग साज सवारंगजैजैकारंगजै करणी ।
सीलां सुख करणी...4
खोखर सब खाया दुष्ट दबाया गाँव झणकलीजस गाया।
रणजीतरूळाया गर्व गळाया गढ़ सूना कर गणणाया।
चारण हरषाया परचा पाया वंश वधायाजसवरणी।
सीलां सुख करणी ...5
समरेजस गावे अवर सुणावे परम सरग सा सुख पावे।
अन्न धन्नउपजावेविदयावधावे उमर अंग रति आवे।
भोजन मन भावे भूत भजावेअणदउपावेअवतरणी।
सीलां सुख करणी...6
सीता खुद सैणीगवरसिवाणी कमला करनल महाकाली।
विरवड़ धन वाली वीसभुजालीहिंगळ ज्वाला हाथाली।
विरदालीवांकल दुर्गा देवलदेंमांलाछलदिवतरणी।
सीलां सुख करणी ...7

छप्पय

धीणो धर धन धान मान दहे मातेश्वरी।
भीरकरे भय भांज समरयांवेळा साँझ री।
चारण वर्ण चकार भरी सभा मोभूपरी।
भणे जात त्रिभंग संग रहे नित शंकरी।
विठूआं वंश वाहरुवणेसिह चढ़े कारज सरे।
कर जोड़ अर्ज भँवरूकरे धन्य कवि जो इष्ट धरे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. के सी श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद, 2009-10
2. सौरभ चौबे, प्राचीन भारत, यूनिवर्सलबुक्स 2020
3. उपिंद्र सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पियर्सन।
4. हरिश्चंद्र वर्मा, मध्यकालीन भारत भाग 1, पृष्ट संख्या 54 हिंदी माध्यम कार्यान्वन निदेशालय नई दिल्ली 2006
5. मोहनलाल जिज्ञासु, चारण साहित्य का इतिहास, जैन प्रकाशन, जोधपुर।
6. भंवरसिंह सामौर, राजस्थानी शक्ति काव्य, साहित्य एकेडमी, नई दिल्ली।
7. मोहन दान, शोध पत्र, जमर: चारण जाति की स्त्रियों में प्रतिकार की परम्परा, Ansh - Journal of History.
8. नाहर सिंह जसोल, चारणांरीबातां पुस्तक।
9. गिरधर दान दासोड़ी , लेख charan.org
10. जमर विषय पर, मोहन दान जी झीबाझाँफली से हुई वार्ता, 3-4-2024
11. बोड़ानातंवर विषय पर, मुल्तान सिंह तंवरबिशाला, से हुई वार्ता, 3-4-2024
12. श्री शिला माता मंदिर की यात्रा और, 7-3-2024
13. 13 वीठू परिवार झणकली से शीला माँ जमर विषय पर, वार्ता 1-4-2026
14. दीप सिंह भाटी, शिला माता का जमर, डिंगलर सावल यूट्यूब।
15. भंवर दान जी के साहित्य की प्राप्ति, जयपाल बारहठ झनकली से।
16. charan.org,charan Shakti
17. डॉक्टर गोपाल दान देथा मौसेरी से शीला माँ जमर पर चर्चा

****